**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157**
**Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.org**
**Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 519-521**

# मानव जीवन में मानवीय मूल्यों की महत्ता

**मंजु बिस्ट**
शोधछात्रा, सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत।

## प्रस्तावना

मूल्य शब्द अंग्रेजी के Value शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है जो लैटिन भाषा के Value शब्द से बना है जिसका अभिप्राय किसी वस्तु की कीमत या उपयोगिता से है। भाषा की दृष्टिकोण से मूल्य मानव के गुणों को ही व्यक्त करता है। हिन्दी में मूल्य शब्द के पर्याय के रूप में आदर्श, शील, गुण आदि शब्दों का भी प्रयोग कहीं–कहीं किया जाता है। मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा अपेक्षाकृत आधुनिक एवं व्यापक है। परम्परागत रूप से धार्मिक शिक्षा तथा नैतिक शिक्षा आदि जो प्रचलित है यह उनसे भिन्न है। मूल्यपरक शिक्षा नैतिक शिक्षा का एक अंग है। सम्पूर्ण मूल्यपरक शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक विस्तृत है जिसमें नैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं वैज्ञानिक पक्ष आदि सम्मिलित है।

'मूल्य' शब्द को सामान्यतः इस रुप में परिभाषित किया जा सकता है – ''वह जो इच्छित है, हमारी इच्छाओं की पुष्टि का प्रयास करते है, ज्ञान इस प्रयास का मार्ग प्रशस्त करता है और ज्ञान के आधार पर चेतनावस्था में लक्षण ही की गई इच्छाओं की तुष्टि या प्राप्त किए गए लक्ष्य है। मूल्य हैं।''मूल्य मनुष्य के जीवन तथा समाज के प्रत्येक आयाम से संबंधित होते है। मनुष्य की ईच्छाओं और आकांक्षाओं को नियंत्रित करने का श्रेष्ठ साधन मूल्य ही है। मूल्य ही व्यक्ति के जीवन को आदर्श का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मूल्य व्यक्ति समूह को भौतिक एवं सामाजिक रुप से समायोजित करने का साधन (माध्यम) होते है। जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी व सामाजिक प्रगति की अभिव्यक्ति कर पाता है। मूल्य व ज्ञान परस्पर एक दूसरे पर आधारित हैं तथा इनके मध्य अर्न्तसंबंध जीवन के सभी पक्षों पर लिऐ जाने वाले निर्णयों के लिए महत्वपूर्ण मार्ग प्रस्तुत करते है।

विभिन्न विद्वानों और दार्शनिकों ने अपने –अपने विचारों द्वारा मूल्यों की व्याख्या कर परिभाषित एवं वर्गीकृत करने का प्रयास किया है। मूल्यों को सामान्यता संस्कृति समाज या उसकी सहयोगी संस्थाओ के माध्यम से खोजा (समझा) जा सकता है। यह देखा गया है कि सांस्कृतिक भिन्नता के कारण मूल्यों के अर्थ –स्वरुप और प्रकार में भी भिन्नता आ जाती है। ये मूल्य व्यक्तिनिष्ठ होते हैं जो कि स्वंय व्यक्ति ही अपना कर उनकी व्याख्या व उन्हें परिष्कृत करता है। समाज (समुदाय) तो केवल सहयोग प्रदान करता है। संस्कृति सही मायने में मूल्यों के माध्यम से स्पष्ट रुप से परिलक्षित होती है। मूल्यों का मूल भाव समान होता है चाहे वो किसी भी देश की संस्कृति क्यों न हो केवल संस्कृति का आधार व उसकी प्रकृति अलग –अलग होती है। मूल्य एक व्यक्ति के जीवन के वे अतिंम लक्ष्य हेाते हैं जिनका चयन एक सतत् प्रक्रिया द्वारा होता है। एक व्यक्ति के लक्ष्य –आकांक्षा विश्वास, रुचि, अभिरुचि, चिन्तन इत्यादि मूल्यों के सूचक ही हेाते है जिनके विकास पर मूल्य निर्भर रहते है। मूल्य एक सामान्य एवं अमूर्त गुण है जेा किसी चीज में निहित रहता है और उसके महत्व की ओर संकेत करता है। दूसरे शब्दों में – ''व्यक्ति या वस्तु का वह गुण जिसके कारण उसका महत्व ; सम्मान या उपयोग समझा जाता है, मूल्य कहा जाता है।

## मूल्यों की प्रकृति

मूल्यों की भी अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है, मूल्यों की प्रकृति को हम साधाणरतः निम्न बिन्दुओं में विभक्त कर स्पष्ट कर सकते है–

1. यह कमोबेश ''अस्थाई'' होते हैं। इन्हें स्थाई नहीं कहा जा सकता। यदि ऐसा होता तो प्रगति अथवा परिवर्तन का मार्ग ही अवरुद्ध हो जाता लेकिन इन्हें पूर्ण रुपेण अस्थाई भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यदि ऐसा होता तो मानव जीव एंव समाज ''सातत्य शून्य'' रह जाता।
2. मूल्य विश्वास हैं। वह ऐसे विश्वास हैं जिन पर किसी कार्य विशेष की वांछनीयता अथवा ''अवांछनीयता'' का निर्णय आधारित होता है।
3. मूल्य स्वंय ''प्राथमिकताएँ'' भी होते है और ''प्राथमिकता –निरुपक'' भी हैं। कतिपय मूल्य स्वंय ''साध्य'' है। जबकि अन्य अनेक मूल्य उन साध्यों की संप्राप्ति के साधन या उपकरण मात्र हैं इसी प्रकृति के कारण मूल्य स्पर्धात्मक पद –सोपान उच्चतर से निम्नतर क्रम में भी अवस्थित हेाते है।
4. मूल्य आचारण की प्रवृतियों या दिशाओं के निर्धारक और अस्तित्व की निर्धारक स्थितियॉ भी है। इसी कारण मूल्यों का वर्गीकरण ''अन्त वैयक्तिक एवं अर्न्तवैयक्तिक'' आधारों पर हो सकता है। कतिमय मूल्य ''विशिष्ट परक'' होते है।

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि मूल्य हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक है तथा पूरी शिक्षक्षा की वास्तव में मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया है।

शिक्षा समाज रुपी व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। आज समाज में चुतर्दिक नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट आई अतः शिक्षा के क्षेत्र में भी यह गिरावट अनुशासनहीनता, अध्ययन–अध्यापन में अपेक्षित स्तर का अभाव, अनुत्तरदायित्व, स्वकर्तव्य के प्रति उदासीनता, श्रम के प्रति अनास्था आदि विधि रूपों में दृष्टिगोचर होती है। अतः आज मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता बड़ी तीव्रता से अनुभव की जा रही है। नई शिक्षा नीति में भी इस और अपेक्षित ध्यान दिया गया है। इस सम्बन्ध में नई शिक्षा सम्बन्धी दस्तावेज (शिक्षा की चनौति–नीति सम्बन्धी प्ररिप्रेक्ष्य) में गुम्फित यह विचार–बिन्दु हमारी समझ एवं सोच–प्रक्रिया को भली भाँति स्पष्ट करता है। मूल्यों की प्रकृति के बारे में तीन मत प्रचलित हैः–

1. **आत्मनिष्ट मतः–** इस मत के अनुसार मूल्य इच्छा, रूचि, पसन्द, मेहनत करने, संकल्प–शक्ति, कार्य तथा सन्तोष जैसे कारकों पर निर्भर होते है। इन सभी कारकों के परिणामस्वरूप व्यक्ति के निजी जीवन में मुल्य विकसित होते है तथा वे

व्यक्ति के अनुभवों से अत्यधिक जुड़ें रहते हैं।

2. **वस्तुनिष्ठ मतः–** इस मत के अनुसार मूल्य व्यक्ति से स्वतन्त्र होते है तथा वे व्यक्ति में निहित होते हैं उनमें वस्तुनिष्ठता होती है।
3. **आपेक्षिकीय मतः–** इस मत के पोषक मूल्यों को मूल्य प्रदान करने वाले मानव तथा उसके वातावरण के मध्य एक सम्बन्ध मानते हैं। वे मूल्य को अंशतः भावना तथा अंशतः तर्क समझते है। मूल्य नियामक तथा संरचनात्मक नियमों के मिलन स्थल हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार सूर्य को विरण से दूर नहीं किया जा सकता। खुशबू को फूल से दूर नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार मूल्यों को मानव से अलग नहीं किया जा सकता है। मूल्य इच्छा, रूचि, पसंद, मेहनत करने, संकल्प शक्ति, कार्य तथा संतोष जैसे अनेक कारकों पर निर्भर करता है। निजी जीवन में ये सब कारक हैं जिनके परिणाम स्वरूप मूल्य विकसित होते हैं तथा अनुभवों से अत्यधिक जुड़े रहते हैं। मूल्य गहरे, ऊँचे जटिल विषय हैं और ऐसा ही उनका ज्ञान है।

## मूल्यों के प्रकार

युग के परिवर्तन के साथ–साथ में भी परिवर्तन आता है। समय व काल की जरुरतों के अनुसार मूल्य का वर्गीकरण[19] इस प्रकार किया जा सकता हैः–

1. **सैद्धान्तिक मूल्य –** इसके अन्तर्गत किसी भी क्रिया के सिद्धांतों के प्रति लगाव तथा सत्य की खोज के प्रति प्रेम को सम्मिलित करते हैं।
2. **सामाजिक मूल्य –** इसके अन्तर्गत समाज, सहायता, दया, प्रेम, सहानुभूति मानव जाति कि सेवा करने की भावना को सम्मिलित करते हैं।
3. **धार्मिक मूल्य –**इससे तात्पर्य ईश्वर में विश्वास, स्वर्ग, नर्क का भय, धर्म एवं गुरूओं में विश्वास ईश्वर की अराधना आदि धार्मिक भावनाओं से है।
4. **आर्थिक मूल्य –**समस्य समाज की उसकी कार्यप्रणाली आर्थिक मूल्यों पर आधारित है। आर्थिक मूल्य से तात्पर्य मुद्रा व धन एकत्र करने की प्रवृत्ति से है।
5. **सौन्दर्यात्मक/कलात्मक मूल्य –**ये वे मानदण्ड हैं जिससे हम सुंदरता का निर्णय करते हैं अर्थात् इसमें हम सुंदरता के प्रति प्रेम, चित्रकला, संगीत, नृत्य, कविता, भवन, निर्माण, कला एवं साहित्य के प्रति प्रेम आदि की भावनाओं को सम्मिलित करते हैं।
6. **राजनैतिक मूल्य –**इससे तात्पर्य पद, प्रतिष्ठता, प्रभुत्व एवं शक्ति में रूचि रखने की भावना से है।
7. **समग्र मूल्य –** ये मूल्य नैतिकता से सम्बन्धित होते हैं। जैसे– ईमानदारी, वफादारी, पवित्रता, दूसरों का सम्मान करना, सभी के साथ उचित व्यवहार करना।

## निष्कर्ष

'मूल्यपरक शिक्षा' की आज जितनी आवश्यक अनुभव की जा रही है उतनी पहले कभी नहीं थी, क्योंकि आज हम एक गहन संक्रान्तिकाल से गुजर रहे हैं। हमारे प्राचीन परम्परागत मूल्यों में कुछ तो पूर्णतः विघटित हो चुके हैं और कुछ बड़ी तीव्र गति से विघटित हो रहे हैं। किन्तु नये मूल्य अभी प्रतिष्टित अथवा स्थापित नहीं हो पाये हैं आज सदाचरण, सत्य, अहिंसा, प्रेम,शान्ति जैसे शाश्वत परम्परागत मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की महती आवश्यकता है। ये मूल्य न केवल व्यक्तिगत उत्थान के लिए अपितु सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति एवं शान्ति के लिए भी परम आवश्यक हैं।

हमारी प्राचीन परम्परा एवं संस्कृति से परिपोषित एवं वैयक्तिक अस्मिता एवं विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों से नियन्त्रित जीवन–मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा में शिक्षण संस्थाओं का अपना विशिष्ट योगदान रहा है। किन्तु आज विभिन्न सामाजिक–आर्थिक कारणों से अधिकांश संस्थाएं स्वयं को धर्मसंकट की स्थिति में पा रही हैं। शिक्षण–व्यवस्था हमारी सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग है। अतः समाज में विविध मानवीय मूल्यों में लक्षित गिरावट का असर शिक्षण–व्यवस्था पर भी होना स्वाभाविक है। इस गिरावट के कौन से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष, समवायी–असवायी आदि कारण हैं एवं वर्तमान परिस्थितियों में उपलब्ध संसाधनों की सहायता से उनमें क्या, कितना और कैसे सुधार लाया जा सकता है और तदर्थ शिक्षण–संस्थाओं में विविध स्तरों और पर कौन से आयोजन–परिवर्तन सम्भावित एवं व्यावहारिक होंगे, ऐसे ही कतिपय हेतु विस्तृत कार्यक्रम एवं अनेक उपयोगी सुझाव यथास्थान दिये गये हैं। छः परिशिष्टों में दैनदिन व्यावहारिक उपयोग की सामग्री भी दी गई है।

विविध मानव–मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा के विषय में उपलब्ध विचारों को हम स्थूलतः तीन दृष्टिकोणों के रूप में रखते हैं– पूर्ण निराशावादी, पूर्ण आशावादी एवं आशावादी। प्रथम दृष्टिकोण के पक्षधर सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन लाये बिना मानव–मूल्यों की प्रतिष्ठा असम्भव मानते हैं।

कुछ तो शासन–तन्त्र में ही पूर्ण–बदलाव इस हेतु आवश्यक समझते हैं। दूसरे दृष्टिकोण के समर्थक पूर्ण आशाादी एवं आदर्शवादी कोटि के अन्तर्गत आते हैं। उनके अनुसार किसी भी बुराई का अन्त बुराई से नहीं होता, बुराई के बार अच्छाई आना नैसर्गिक है। तीसरे दृष्टिकोण के पक्षधर न तो पूर्ण निराशावादी हैं और न ही पूर्ण आशावादी, वे मात्र आशावादी हैं। उनका कथन है कि मूल्य पूर्णतः नष्ट नहीं हुए, उनका अस्तित्व है, भले ही वे धूमिल अथवा विघटित अवस्था में हों। अतः अभिभवक, शिक्षक, शिक्षार्थी, प्रशासक तथा समाज के विभिन्न घटकों के सामूहिक प्रयत्न से वर्तमान स्थिति बहुत कुछ सुधारी जा सकती है। कुछ ऐसा ही दृष्टिकोण हमारे नीति–निर्धारकों का है।

नई शिक्षा–नीति में मूल्यों के गिरते स्तर पर चिन्ता करते हुए 'मूल्यपरक शिक्षा' पर विशेष बल दिया गया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को मन में बैठाना और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का शारीरिक, बौद्धिक और सौन्दर्यपरक विकास करना नई शिक्षा नीति के लक्ष्यों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है आज शिक्षा–व्यवस्था में गुणात्मक सुधार की माँग की आवश्यकता है। दार्शनिक दृष्टि से जीवन–मूल्यों के अनवरत शोध एवं परीक्षण का नाम ही शिक्षा हैं। अतः जीवन–मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता वादातीत है, अपरिहार्य है। इस दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ की उपादेयता एवं प्रासंगिकता स्वतः सिद्ध है।"

## संदर्भ


1. पाण्डेय, रामशकल – शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 2007
2. सिंह, मनोज कुमार – शिक्षा और समाज आदित्य पब्लिशर्स, बीमा मध्य प्रदेश 1998
3. सिंह, रामजी – भारतीय चिन्तन और संस्कृति, मानक पब्लिकेशन्स दिल्ली 1997
4. शर्मा, ओ.पी. – उभरते भारतीय समाज में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा 2007–08

5. शर्मा, श्रीराम आचार्य – शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योती संस्थान मथुरा, 1998
6. त्यागी गुरूशरण – उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक, मंदिर, आगरा 2008
7. मिश्र, करूणाशंकर – मूल्य शिक्षण भारतीय समाज में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2005–06
8. नेगी, सुरेन्द्रसिंह – ''नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिशर्स मध्यप्रदेश 2000
9. पाण्डे, गोविन्दचन्द्र – ''मूल्य मीमांसा'', राजस्थान हिन्दी जयपुर 1973
10. श्री शरण – ''अभिनव नैतिक शिक्षा'', आधुनिक प्रकाशन दिल्ली 1997
11. ढौलियाल फाटक, सच्चिदानन्द अरविन्द– ''शैक्षिक अनुसंधान विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1982